ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

इस अंक का मूल्य : ५ रु०
वर्ष ३७, अंक ३६
सोमवार २५ अगस्त २०१४ से रविवार ३१ अगस्त २०१४ तक
विक्रमी सम्वत् २०७१ दयानन्दाब्द : १९०
सृष्टि सम्वत् १९६०८५३११५ वार्षिक : २५० रुपये
फैक्स : २३३६५९५९ ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें www.thearyasamaj.org/aryasandesh
पृष्ठ संख्या १ से ८ तक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं कश्यप वेद रिसर्च फाउंडेशन के तत्वावधान में नव संकल्पित

महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. वेद अनुसंधान केन्द्र (वेदाश्रम) का

शिलान्यास समारोह एवं राष्ट्र समृद्धि यज्ञ

वेद मन्त्रों का एक स्वर में शुद्ध उच्चारण, समान वेशभूषा, एक साथ क्रिया,

जाति/लिंगभेद बिना, २५०० याज्ञिक, यज्ञ का सामान सबका अपना-अपना,

सब कुछ अद्भुत् था

राष्ट्र समृद्धि यज्ञ, अतिथियों का उद्‌बोधन एवं ध्वजारोहण

स्वाधीनता दिवस के अवसर पर २००८ यज्ञिकों को अपने ब्रह्मत्व में राष्ट्र समृद्धि यज्ञ कराते आचार्य एम. आर. राजेश एवं आहुति देते महाशय जी

सम्बोधन देते स्वामी सदानन्द जी, स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी सौम्यानन्द जी, डॉ. ब्रह्ममुनि जी, स्वामी ऋतस्पति जी

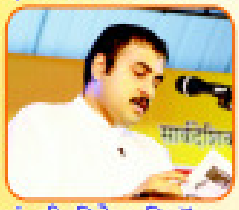

सम्बोधित करते डॉ. सत्यपाल सिंह, श्री धर्मपाल आर्य, श्री अरुण प्रभाकरण, श्री विपिन दास एवं श्री विवेक शिर्नाय

राष्ट्रीय ध्वज एवं ओ३म् ध्वज फहराए जाने पर राष्ट्रगान एवं वैदिक राष्ट्रीय प्रार्थना गाते आर्यजन

कोझिकोड में वेदाश्रम (वैदिक रिसर्च फाउण्डेशन) भवन का शिलान्यास

द्रुतगति से होगा वैदिक धर्म का प्रचार

आर्य समाज का अपनी स्थापना से एक ही सबसे बड़ा उद्देश्य रहा है मानव मात्र को वेद तथा वैदिक संस्कृति का ज्ञान कराना। इसलिए वह देश के प्रत्येक कोने में पहुंचकर लोगों की चेतना को जागृत कर ऋषियों की पावन वैदिक संस्कृति से जोड़ने का सत्कार्य करता रहा है।

इसी पृष्ठभूमि में देवभूमि केरल में लोगों को महर्षि दयानन्द की मान्यताओं से अवगत कराने तथा साम्यवाद और ईसाइयत के बढ़ते प्रभाव से अपनी स्वयं की संस्कृति को भूलते जा रहे केरल वासियों तक वेदों का दिव्य ज्ञान पहुंचाने के लिए दीर्घकाल से अनेक प्रयास किये जा रहे थे जिसमें अनेक आर्य विद्वानों का योगदान रहा है – आचार्य नरेन्द्र भूषण जी को इसके लिए हमेशा याद किया जाएगा। उन्हीं से प्रेरण पाकर आचार्य एम. आर. राजेश जी ने अपने जीवन को वेद की आज्ञाओं को जन-जन तक पहुंचाने के लिए समर्पित कर दिया तथा उनके कार्य का ऐसा प्रभाव हुआ कि आज केरल में वेद के मन्त्र पुन: घर-घर में उच्चारित होते हैं तथा प्रात:-सायं अग्निहोत्र की अग्नि घर-घर में प्रज्वलित होने लगी। कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए वर्तमान का 500 गज का भवन भी पर्याप्त नहीं था। अत: अधिक साधन की आवश्यकता है।

उन सभी प्रयासों की परिणति सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं कश्यप वेद रिसर्च फाउण्डेशन के तत्वावधान में महाशय धर्मपाल एम.डी.एच वेद अनुसंधान केन्द्र (वेदाश्रम) के रूप में हुई जिसका शिलान्यास समारोह 15 अगस्त 2014 शुक्रवार को कोषिक्कोड (कोझीकोड) केरल में भव्य राष्ट्र समृद्धि महायज्ञ के साथ हुआ। वेदाश्रम के इस शिलान्यास समारोह में आर्य जगत के ख्याति प्राप्त स्वामी सदानन्द जी (पंजाब), स्वामी प्रणवानन्द जी (दिल्ली), स्वामी सौम्यानन्द जी (हरयाणा), स्वामी ऋतस्पति जी (होशंगाबाद), डॉ.ब्रह्ममुनि जी (महाराष्ट्र), महाशय धर्मपाल चेयरमेन एम.डी.एच., श्री सत्पाल सिंह जी (सांसद), विनय आर्य, महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, धर्मपाल आर्य, वरिष्ठ उपप्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, राजीव आर्य, महामंत्री आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य, राधाकृष्ण वर्मा (कर्नाटक), छत्तीसगढ़ सभा के मन्त्री श्री दीनानाथ वर्मा जी एवं दिल्ली सभा के उप प्रधान श्री ओम प्रकाश आर्य सहित देश के प्रत्येक कोने से आर्यजन उपस्थित थे।

कार्यक्रम का प्रारंभ राष्ट्रीय प्रार्थना के साथ हुआ जिसमें चारों वेदों के मंत्रों का पाठ किया गया। स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर वैदिक ओ३म् ध्वज के साथ ही राष्ट्रगान से पूर्व राष्ट्रीय ध्वजारोहण भी किया गया।

कार्यक्रम के अध्यक्ष आचार्य एम. आर. राजेश जी थे जिन्होंने पिछले एक दशक से अपना तन मन एवं धन सब कुछ ऋषि के इस मिशन के पीछे समर्पित कर दिया है। मलयालम में दिये गये उनके स्वागत भाषण की प्रत्येक पंक्ति पर लगातार तालियों की गड़गड़ाहट हो रही थी। उन्होंने केरल की ओर दृष्टि करने एवं यहां पधारने के लिए धन्यवाद भी किया।

इस अवसर पर महाशय धर्मपाल आर्य चेयरमैन एम.डी.एच. मसाले के कर-कमलों से नव संकल्पित वेदाश्रम भवन का शिलान्यास किया गया। विधिवत वेदमंत्रों के उच्चारण के साथ संकल्प व्यक्त किया गया कि आगामी 15 अगस्त 2015 को इस भवन का लोकार्पण समारोह भी इसी प्रकार से भव्य रूप से मनाया जाए।

कोषिक्कोड का यह वेदाश्रम शिलान्यास समारोह कोई साधारण भवन के शिलान्यास की तरह नहीं था। इसमें भावना छिपी थी संस्कृति के संरक्षण की, वेदों के पुनरुद्धार की, ईसाई, मुस्लिम और कम्युनिस्ट विचारों के जबरदस्त प्रभाव के कारण दबाई, कुचली जा रही भारतीय अस्मिता की रक्षा की और यही कारण था कि विनय आर्य महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपने उद्बोधन में शंकराचार्य की इस जन्मभूमि में मथुरा से निकली देव दयानन्द की ज्योति को घर-घर में पहुंचाने का संकल्प व्यक्त किया।

समारोह में अपने विचारों को व्यक्त करते हुए महाशय धर्मपाल जी एम.डी.एच मसाले वालों ने कहा कि यदि स्वर्ग चाहते हो तो ओम् का जाप करो, यज्ञ करो। वेद का यही आदेश है – इस विचार को आचार्य जी घर-घर पहुंचा रहे हैं। जितना महान ये यज्ञ कर रहे हैं उसमें हम तो एक छोटी सी आहुति देने आए हैं। परमात्मा हम सबको ऐसा आशीर्वाद दे कि हम सब मिलकर यह कार्य पूरी शक्ति से कर सकें।

संसद सदस्य डॉ. सत्यपाल सिंह ने कहा कि लार्ड मैकाले ने भारतीय संस्कृति को नष्ट करने का जो कुचक्र रचा उसका निराकरण वैदिक संस्कृति के संरक्षण और व्यापक प्रचार से ही संभव है। उन्होंने कहा कि यहां आकर देखा वो जो सोचा भी नहीं था। जो देखा वो स्वप्न ही है। उन्होंने कहा कि सुदूर केरल में उचित वेद ज्ञान का यह सूर्य पूरे भारत में वेद ज्ञान का प्रकाश फैलाएगा।

आर्य संन्यासी स्वामी प्रणवानंद सरस्वती ने ऐसे भव्य आयोजन और शुभ संकल्प के लिए महाशय धर्मपाल जी को आशीर्वाद देते हुए सभी दिशाओं में इस प्रकार के आश्रम खोलने को कहा।

कार्यक्रम में स्वामी सौम्यानन्द जी, स्वामी ऋतस्पति, डॉ. ब्रह्ममुनि जी ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

वेदाश्रम के इस शिलान्यास समारोह के अवसर पर आर्य समाज के सिद्धांतों को जन जन तक पहुंचाने के लिए आचार्य एम. आर. राजेश जी द्वारा मलयालम भाषा में लिखी गई नौ पुस्तकों का भी विमोचन किया गया।

केरल के कोझिकोड में आयोजित इस भव्य समारोह में देश के विभिन्न आर्यसमाजों से आर्यजन पहुंचे थे। इस समारोह की सबसे बड़ी विशेषता रही आगन्तुक अतिथियों को अतिथि सत्कार जिसने आने वाले प्रत्येक जन का हृदय जीत लिया। रेलवे स्टेशन से समारोह स्थल तक ले जाने, ठहरने का जो प्रबंध आयोजक कश्यप वेद रिर्सच फाउण्डेशन ने किया उसकी जितनी प्रशंसा की जाए उतनी कम है।

अभूतपूर्व स्वागत

समारोह में पधारे प्रत्येक अतिथि का तुलसी के पत्तों की माला पहनाकर स्वस्तिवाचन के मंत्रों के साथ केरलीय ढोल नगाड़ों की थाप पर आत्मीयता पूर्वक स्वागत किया गया। ऐसा स्वागत लेखक ने इससे पूर्व कभी नहीं देखा। बस से उतरते ही मलयालम की भूमि पर हिन्दी में नमस्ते का श्रवण आनन्दातिरेक से हृदय को पूरित कर रहा था।

मण्डप द्वार पर स्थानीय निवासियों एवं अग्निहोत्र करने वालों का रजिस्ट्रेशन किया जा रहा था जिसका प्रबन्ध अत्युत्तम था।

पेट भरा पर मन नहीं

चूंकि कार्यक्रम केरल में था और मन में यह धारणा पूर्व से ही बैठी हुई थी कि दक्षिण में तो रोटी मिलना मुश्किल है जितने दिन रुकेंगे केवल दाल-चावल से काम चलाना होगा। किन्तु जब इस समारोह के अतिथि सत्कार को देखा तो पूर्व की सारी धारणाएं ध्वस्त हो गईं। प्रात:काल के नाश्ते में इडली, बडा, मेदुबडा, सांभर, नारियल की चटनी, पुलाव ने उत्तर भारतीय भोजन की विस्मृत करा दिया।

मध्याहन में जब केले के पत्तों पर कयापातोरन, कोजीकोड हलवा, पायसा, केला फ्राई, चना मीठा, पूरी, चटनी, भाजी (केला, गाजर, आलू व अन्य मिक्स सब्जी) रोटी, दाल के साथ खाई तो आत्मा तृप्त हो गई। इतने स्वादिष्ट भोजन के उपरान्त तो मुझसे रहा नहीं गया और आचार्य राजेश जी को कह दिया कि आचार्य जी पेट भरा है पर मन नहीं।

एक क्रांतदर्शी व्यक्तित्व आचार्य राजेश

केरल में वेदाश्रम की स्थापना का यह

– शेष पृष्ठ 5 पर

शिलान्यास समारोह के कुछ खास बिन्दु

- 2500 नर-नारी बिना जातिभेद, लिंगभेद के एक साथ यज्ञ करने का केरल के लिए एक अद्भुत अनुभव था।
- एक स्वर एक वेशभूषा और सेना जैसे अनुशासन में अग्निहोत्र देखा दुनिया के हजारों आर्यजनों ने।
- अधिकतर आर्यजन परिवार सहित समारोह में पधारे हुए थे।
- विश्व के लाखों लोगों ने साधना एवं संस्कार चैनल पर देखा प्रसारण।
- यू.ट्यूब पर भी देखी जा सकती है कार्यक्रम की वीडियो।
- सम्पूर्ण कार्यक्रम की चित्रमय झांकी एवं वीडियो देखने के लिए लॉगऑन करें – www.thearyasamaj.org

केरल के कोझीकोड़ में सम्पन्न
वेद अनुसंधान केन्द्र शिलान्यास
राष्ट्र समृद्धि यज्ञ
वीडियो सीडी
मात्र 25/- रुपये
प्राप्त करने के लिए के लिए **श्री विजय आर्य जी** (9540040399) से सम्पर्क करें। डाक व्यय पृथक से देय होगा। – **व्यवस्थापक, वैदिक प्रकाशन**

Shilannyas for Mahashaya Dharmapal MDH Veda Research Foundation Kozhikode (Calicut), Kerala : A report of Sh. Vivek Shenoy, Convenor

The World over, Kerala is known as God's own Country. International and domestic tourists are attracted towards Kerala for its Ayurveda, Yoga, nature's beauty and hospitality.

KVRF(Kashyap Veda Research Foundation) headed by Acharya Shri M. R. Rajesh, a spiritual guide, philosopher and a Vedic scholar, has brought a cultural revolution in Kerala.

Today we can witness 35,000 families regularly practicing Pancha Maha Yajna including Sandhya-Agnihotra every day. KVRF, a 11 year old institution dedicated to propagate Vedic Philosophy as prescribed by Maharshi Dayanand Saraswati witnessed a historical event on 15th Aug at Kozhikode, Kerala.

2008 people performed Agnihotra in individual Hawan Kund and chanted Bhagha (Pratah-kala)Sukta, Sangathana Sukta, Sandhya-Vandanam and Agnihotra in the land donated by Mahashay Dharmpalji, founder of M.D.H. Group, a philanthropist, industrialist and an ardent follower of Maharshi Dayanand Saraswati. The program was coordinated by Shri Vinay Arya, the dynamic and dedicated Gen. Secretary Delhi Arya Pratinidhi Sabha & Dy. Secretary of SAP Sabha.

In addition to the invitees and a large number of general public, the program was also well-attended by over 200 Arya Samaj Dignitaries from different parts of India.

The program began with National Flag hoisting by Mahashay Dharmpalji along with Acharya Shri M.R. Rajesh and Dr. Satyapal Singh, former Police Commissioner of Mumbai, Vedic Scholar and M.P. of Bagpat, Uttar Pradesh. Chanting of Kerala style Veda-ghosham started in the back ground and KVRF team escorted Mahashayji to the flag hoisting of 'OM' Flag and then Acharya Shri M.R. Rajeshji welcomed Mahashayji and spoke on the importance of Vedic teachings and how he visualized this ashram's importance in the present age. He also spoke on the importance of Pancha Maha Yajnas and Samsakara Kriyas. Subsequently, the historical event commenced with 2008 people from all the walks of the life Men, Women, Children, Senior Citizens, Muslims, Christians coming together and performing Sandhya-Agnihotra in the span of 2 acre land.

Mahashayji and his family, along with Dr. Satyapal Singh sat at the main hawan kund and Acharya Shri with Arun Prabhakaran and Suresh Peruvayal began chanting mantras and the divine vibration of mantras were felt in every inch of our body. Then Mahashayji with Acharya Shri & Dr. Satyapal SIngh M.P proceeded towards the foundation stone laying ceremony and the unveiled the foundation stone which was inscribed with the names of the Samnyasis and dignitaries invited to the event.

Welcome speech in Malayalam was delivered by Vivek Shenoy and in Hindi by Arun Prabhakaran.

Eight books of AcharyaShri in Malayalam were released by dignitaries viz: Shriyuts; Mahashayji, Dr. Satyapal Singh, Swami Ritaspati, Swami Sadananda, Dr. Brahmamuni, Dharmapal Arya and Dr. Radhakishan Varma.

Mahashayji honoured Shri. Muraleedhran, KVRF Saraswath Sabha President, for his excellent work in respect of preparing this land as a master piece to conduct this grand function.

Vinayji spoke about the important role of Mahashayji in building a better world with his donation to Acharyas Shri Rajesh who is propagating Vedic Dharm in the nook and corner of Kerala & South India.

Then, Swami Pranavanand spoke on the achievement of KVRF and Acharya Shri Rajesh.

Swami Sadanada spoke regarding how Acharya Shri's vision has been fulfilled by Mahashayji and he sees a new era Shankaracharya in Acharya Shri Rajesh's approach, vision and mission in building the Vedic era again

Mahashayji spoke on his commitment on reviving Vedic Dharm and support to Acharya Shri and he was spell-bound and delighted to see thousands of people performing Sandhya and Hawan in this land.

Further, Dr. Satyapal Singh spoke on the revival of Vedic Dharm, especially in Kerala through Acharya Shri and sang a spontaneous Kavitha on the Vedic revival in Kerala through AcharyaShri. He also spoke on how impressed he was by seeing the Sandhya Hawan in a land like Kerala where social system is presently fragile.

Dr. Radhakrishna Varma of Bangalore was felicitated during the event for his exemplary coordination in South India for Veda Prachar and excellent work carried out in Karnataka.

The Veda Chanting by Children below 10 years, followed by Vedic chanting by ladies was well received and appreciated.

contd.... P. 6

Acharya Rajesh : A living legend of Kerala

Salient features of Sandhya & Agnihotra as taught and practised in Kerala.

* Yajna symbolises God worship. While the material offered as oblation in Agni purifies the physical atmosphere, the Mantra recited in the Yajna purifies the mind and arises its latent power.
* If Sandhya-Agnihotra is practised regularly, it brings tranquillity, peace, equilibrium of sensual activities, purity of taught and harmonious relationship with fellow beings and ultimately culminates in the realisation of God.
* Acharya Rajesh is an eminent Vedic Scholar, inspired by the precepts of the Vedic Dharma as propagated by Maharshi Dayananad Saraswati, an illustrious visionary and seer of the modern age.
* Acharya Rajesh has trained more than 35,000 families in Kerala and they are daily performing *Sandhya-Agnihotra* at home with utmost *Shraddha*.
* 15th August, 2014, Kerala witnessed a unique event where 2008 people came together and performed *Sandhya-Agnihotra* at Kozikode, Kerala. All these 2008 members have undergone vigorous training at Kashyap Veda Research Foundation (KVRF), Kozikode on *Pancha Maha Yajnas* – the five pristine duties of house-holders.
* All strata of society participated in this divine ritual irrespective of cast, creed, nationality, religion, gender and economic status ranging from Judges, Lawyers, Doctors, Engineers, Government Official, Fishermen, Auto-drivers, House Wives, Children, College Students, Christians, Muslims and from Brahmins to Dalits.
* There were representations from all Distts. of Kerala i.e.; from Kasaragod – northern tip to Trivandrum – southern tip.
* The entire group was wearing unique traditional dress as prescribed in the scriptures i.e. unstitched white cotton *dhoti* and *uttareeya* for men and white cotton *saree* for women.
* The entire program was organised and conducted by volunteers with utmost care, sincerity and dedication.
* The Mantras were chanted with unison, authenticity and in traditional Kerala style charging the whole environment with divine vibrations symbolising the dawn of a new Vedic-Era in Kerala.

आर्यसमाज को संगठनबद्ध करने तथा वर्तमान परिस्थितियों में आर्यसमाज के कार्यों को गति देने हेतु

क्षेत्रीय विचार गोष्ठियों का आयोजन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की गत अन्तरंग सभा बैठक दिनांक 3 अगस्त, 2014 में लिए गए निर्णय के अनुसार दिल्ली की समस्त आर्य समाजों के अधिकारियों, सदस्यों एवं कार्यकर्त्ताओं को आर्यसमाज के कार्य, गतिविधियों, संगठन सम्बन्धी जानकारी देने के उद्देश्य से विभिन्न क्षेत्रीय गोष्ठियों का आयोजन किया जा रहा है। बैठक मे लिए गए निर्णय के अनुसार उत्तरी दिल्ली में एक, उत्तर-पश्चिम में एक, पश्चिम दिल्ली में दो, दक्षिण दिल्ली में दो, पूर्वी दिल्ली में एक तथा मध्य दिल्ली में भी एक बैठक आयोजित की जाएंगी।आर्यसमाजों के समस्त अधिकारियों, कार्यकर्त्ताओं एवं सदस्यों से निवेदन है कि वे अपने क्षेत्रानुसार बैठक में अवश्य ही पधारकर संगठन शक्ति का परिचय दें। बैठक का दिन, समय, स्थान एवं संयोजक निम्न प्रकार निश्चित किए गए हैं। समस्त उपस्थित सदस्यों के लिए सायंकालीन भोजन की व्यवस्था आर्यसमाज की ओर से की जाएगी। - **विनय आर्य, महामन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, मो. 9958174441**

उत्तरी, ग्रामीण एवं उ.प. दिल्ली

स्थान : आर्यसमाज सरस्वती विहार
दिनांक : 7 सितम्बर, 2014 (रवि)
समय : दोपहर 2:30 से सायं 7 बजे
संयोजक : श्री सुरेन्द्र आर्य
मो. 9811476663

पूर्वी दिल्ली क्षेत्र

स्थान : आर्यसमाज प्रीत विहार
दिनांक : 13 सितम्बर, 2014 (शनि)
समय : दोपहर 2:30 से सायं 7 बजे
संयोजक : श्री सुरेन्द्र रैली
मो. 9810855695

मध्य दिल्ली

स्थान : आर्यसमाज हनुमान रोड
दिनांक : 21 सितम्बर, 2014 (रवि)
समय : प्रात: 11:30 से सायं 7 बजे
संयोजक : श्री अरुण वर्मा
मो. 9540086759

पश्चिमी दिल्ली -1

स्थान : आर्यसमाज कीर्ति नगर
दिनांक : 5 अक्तूबर, 2014 (रवि)
समय : दोपहर 2:30 से सायं 7 बजे
संयोजक : श्री ओम प्रकाश आर्य
मो. 9540077858

पश्चिमी दिल्ली -2

स्थान : आर्यसमाज जनकपुरी सी-3
दिनांक : 12 अक्तूबर, 2014 (रवि)
समय : दोपहर 2:30 से सायं 7 बजे
संयोजक : श्री शिव कुमार मदान
मो. 9310474979

दक्षिण दिल्ली

स्थान : आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश-1
दिनांक : 26 अक्तूबर, 2014 (रवि)
समय : दोपहर 2:30 से सायं 7 बजे
संयोजक : श्री राजीव चौधरी
मो. 9810014097

एम.डी.एच. वेद प्रचार वाहन उपलब्ध

सभा द्वारा संचालित एम.डी.एच. वेद प्रचार वाहन की सेवाएं भी इस अवसर पर प्रचारार्थ उपलब्ध रहेंगी। वेद प्रचार मंडलों से निवेदन है कि वेद प्रचार वाहन अपने यहां मंगवाकर प्रचार कार्य करें। प्रचार वाहन मंगाने हेतु श्री एस.पी. सिंह (9540040324) से सम्पर्क करें।

आर्यसमाजों के पदाधिकारी एवं सदस्यगण कृपया ध्यान दें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से आर्यसमाजों के लिए क्षेत्रीय गोष्ठियों का आयोजन किया जा रहा है। इस श्रृंखला में पहले **उत्तरी दिल्ली, ग्रामीण दिल्ली एवं उत्तर पश्चिम दिल्ली** की गोष्ठियां अलग-अलग निर्धारित की गई थीं। इसमें सुधार करते हुए तीनों क्षेत्रों की बैठक अब एक साथ **7 सितम्बर, 2014 को दोपहर 2:30 बजे से आर्यसमाज सरस्वती विहार** में ही आयोजित की जाएगी। इसी प्रकार दक्षिण दिल्ली क्षेत्र की भी दो गोष्ठियां आयोजित की जानी थीं, जिसे स्थगित करके एक ही कर दिया गया है। अब सम्पूर्ण दक्षिण दिल्ली की एक ही गोष्ठी आयोजित की जाएगी जोकि **आयसमाज ग्रेटर कैलाश-1 में 26 अक्तूबर, 2014 को दोपहर 2:30 बजे से** आयोजित की गई है। समस्त आर्यसमाजों के पदाधिकारियों से निवेदन है कि वे अपने क्षेत्र की गोष्ठी में अपने सहयोगियों के साथ अवश्य ही भाग लें। - ***विनय आर्य, महामन्त्री, 9958174441***

पृष्ठ 3 का शेष

समारोह जितना भव्य और दिव्य रहा उतना ही भव्य और दिव्य है इसके पीछे अहर्निश कार्य करने वाले एक क्रान्तदर्शी व्यक्तित्व। जिनका नाम है आचार्य राजेश। कश्यप वेद रिसर्च फाउण्डेशन के संचालक आचार्य राजेश जी विगत एक दशक पूर्व केरल आये तो देखा कि केरल में वेद का मतलब बाइबिल है वैदिक शब्द का अर्थ पादरी है। बस यहीं से भीष्म प्रतिज्ञा कर संकल्प लिया कि केरल की नई पीढ़ी वेद को वेद कहेगी, वैदिक को वैदिक कहेगी, पादरी और बाइबिल नहीं और लग गये महर्षि दयानन्द की मान्यता के अनुरूप वेद प्रचार के कार्य में।

इसके साथ ही शुरू हुआ महाभियान जिसमें जाति लिंग के भेद को भुलाकर सबको वेद के वास्तविक रूप से अवगत कराया। बिना किसी भेदभाव के सभी को परमात्मा का पुत्र-पुत्रियां मानते हुए वैदिक संध्या, हवन सिखलाना प्रारंभ किया। शाकाहार को बढ़ावा दिया। सेवा करके लोगों को जोड़ा।

बतौर आचार्य राजेश के अनुसार इसके लिए मातृशक्ति ने गांव-गांव, घर-घर जाकर वेद प्रचार का कार्य किया और यही कामना है कि अतिशीघ्र ही केरल का प्रत्येक नागरिक वेद के सही अर्थ को समझ सके।

वेद प्रचार में रत इस तपोनिष्ठ व्यक्तित्व को शतश: प्रणाम एवं धन्यवाद।

आर्य शिरोमणि महादानी महाशय धर्मपाल दो करोड़ देने का निर्णय दो सैकण्ड में

महाशय धर्मपाल जी गत फरवरी मास में भाग लेने गए। वहां वेदाश्रम के लिए भूमि दिखाई गई तो उन्होंने तुरन्त कहा खरीद लो एवं पूछा कि कितने की है। उन्हें जानकारी दी गई कि दो करोड़ रूपये की। महाशय जी ने कहा ठीक है इस निर्णय में महाशय जी ने दो सैकेण्ड का भी समय नहीं लिया। महाशय जी वेदाश्रम के लिए पूर्ण व्यय कर सकते हैं। लेकिन आर्यजनों को प्रेरित करने के लिए एक करोड़ ग्यारह लाख ग्यारह हजार एक सौ ग्यारह रूपये (1,11,11,111/-) दान देने की घोषणा विशाल मंच से की। महाशय जी की घोषणा से आर्यजनों ने राशि देने की घोषणा शुरू कर दी है और इसी दिन 75 लाख रुपये के संकल्प व्यक्त किए गए। कार्यक्रम में उपस्थित एक ऑटो चालक ने भी मंच पर आकर 10,000 रू. दान दिए।

विशाल मंच पर डॉ. सत्यपाल हिसंह जी सांसद एवं स्वामी प्रणवानन्द जी ने महाशय धर्मपाल जी के द्वारा महर्षि दयानन्द के मिशन एवं आर्यसमाज के कार्यों की प्रशंसा करते हुए महाशय धर्मपाल जी को 'महात्मा' कहकर सम्बोधित किया।

ऋशि मिशन को विश्व में फैलाने का क्रान्तिकारी युवा-श्री विनय आर्य

मंच पर उपस्थित सभी वक्ताओं ने श्री विनय आर्य के कार्य की प्रशंसा की एवं उन्हें अपना आशीर्वाद दिया। सभी उपस्थित आर्यजनों ने सफल आयोजन के लिए बधाई दी। मंच पर उपस्थित महाशय धर्मपाल जी ने खड़े होकर श्री विनय आर्य के कार्यों की सराहना करते हुए उन्हें आशीर्वाद दिया।

राष्ट्र समृद्धि महायज्ञ

कश्यप वेद रिसर्च फाउण्डेशन तथा दिल्ली सभा के संयुक्त तत्त्वावधान में वेदाश्रम के इस शिलान्यास समारोह का सर्वप्रमुख आकर्षण का कोई केन्द्र रहा तो वह था राष्ट्रसमृद्धि महायज्ञ। शिलान्यास समारोह होते हुए भी इसने वैदिक कालीन यज्ञ सत्रों का स्मरण करा दिया।

राष्ट्र समृद्धि महायज्ञ के इस अवसर पर 2008 कुण्डीय यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ के प्रारंभ से पूर्व यज्ञ में यज्ञमान बनने के लिए लोग पंक्तिबद्ध होकर विशेष काउण्टरों पर अपना रजिस्ट्रेशन करा रहे थे। इस यज्ञ का ब्रह्मा कौन बने तो उपस्थित संन्यासी परिषद ने निर्णय दिया कि जो पिछले ग्यारह वर्षों से लगातार लोगों को संध्यावंदन एवं यज्ञ सिखला रहे हैं वे आचार्य राजेश जी ही ब्रह्मापद के अधिकारी हैं।

इस प्रकार आचार्य राजेश जी के ब्रह्मत्व में यह 2008 महानुभावों ने एक साथ राष्ट्र समृद्धि यज्ञ प्रारंभ हुआ। यज्ञ के पूर्व गुरुवंदन सूक्त, भाग्य सूक्त तथा संगठन सूक्त का पाठ किया गया। पश्चात् वैदिक संध्या के साथ यज्ञ का प्रारंभ हुआ। यज्ञ में ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना के मंत्रों के पश्चात् छोटे दीपक से बड़ा दीपक जलाया गया। यज्ञमानों ने समिधाधान मंत्रों में अत्यंत भावपूर्ण समर्पण के साथ समिधाओं को हृदय से लगा कर यज्ञ में आहुति दी।

यज्ञ में यज्ञमान बना प्रत्येक व्यक्ति एक जैसी भारतीय वेशभूषा में था। पुरुषों ने धोती व उत्तरीय पहना हुआ था जबकि महिलाओं ने गोल्डन कशीदाकारी युक्त श्वेत साड़ी पहन रखी थी। वस्त्रों की यह एकरूपता दिव्यता का स्मरण करा रही थी कि श्वेत वस्त्रों के समान जीवन भी उदात्त भावों से श्रेष्ठ बने। यज्ञ में प्रत्येक यजमान के लिए पृथक-पृथक तांबें के यज्ञ कुण्ड थे। सभी के लिए छोटा दीपक, बड़ा दीपक, समिधा, सामग्री, घी, यज्ञपात्र थे जो स्वयं यजमान लेकर आये थे। यज्ञ के प्रति यह उनकी अगाध श्रद्धा का परिचायक है।

यज्ञ समापन के उपरान्त मलयालम भाषा में यज्ञ प्रार्थना एवं विश्वकल्याण की कामना की गई। इस यज्ञ की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि इसमें बच्चे एवं बुजुर्गों के अतिरिक्त 80 प्रतिशत युवा दम्पत्तियों ने आहुतियां दीं।

300 के लगभग स्वंय सेवक इस महान राष्ट्र समृद्धि महायज्ञ में अपनी सेवाएं दे रहे थे, उनके कर्तव्य के प्रति समर्पण को बारम्बार प्रणाम। यज्ञ के अंत में 'होता है सारे विश्व का कल्याण यज्ञ से' भजन गाकर यज्ञ के भौतिक एवं आध्यात्मिक महत्त्व को बतलाया गया।

लगभग 5000 नर-नारियों ने इस महान यज्ञ में भाग लिया तथा सबके लिए भोजन व्यवस्था की गई थी।

नश्वर काया को बनाएं अमर कीर्ति का जरिया

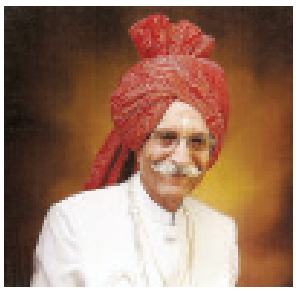

पुण्यात्मा हो या पापी, विद्वान हो या गंवार, धनवान हो या निर्धन–वक्त पूरा होते ही सबको इस दुनिया को अलविदा कह देना पड़ता है। यही कुदरत का कानून है, जो सब पर समान रूप से लागू होता है। नश्वर काया चिता में भस्म हो जाती है और यहां सिर्फ रह जाता है यश–अपयश, कीर्ति–कलंक। इसलिए इस नश्वर काया को लेकर, इस क्षणभंगुर शरीर को लेकर घमंड में चूर रहना किसी भी तरह से मुनासिब नहीं कहा जा सकता। जीवन पानी के बुलबुले की तरह है, जिसका फूटना तय है। अत: बड़ी होशियारी से कदम बढ़ाना चाहिए और अपने शरीर का, अपनी शारीरिक–मानसिक क्षमता का इस्तेमाल उन कर्मों के लिए करना चाहिए, जिनकी बदौलत हमारी कीर्ति अमर हो सके।

श्रीराम, श्रीकृष्ण, महात्मा बुद्ध, महावीर, गुरु नानक देव, महर्षि दयानंद, महात्मा गांधी, भगत सिंह आदि महापुरुष आज हमारे बीच नहीं हैं, मगर उनकी मौजूदगी का अहसास हम सभी को होता है। आखिर क्यों? इसलिए कि उन्होंने अपनी नश्वर काया का इस्तेमाल इस संसार को खुशहाल बनाने के लिए किया और उनकी कीर्ति अमर हो गयी। उनका जीवन हम सभी के लिए प्रेरणा है कि जो परहित के लिए समर्पित रहता है, जो सबकी खुशहाली के लिए संघर्षरत रहता है, उसे यह दुनिया हमेशा सलाम करती है। अत: हमें भी उनके बताए हुए मार्ग का ही अनुसरण करना चाहिए, उसी राह पर आगे बढ़ना चाहिए।

जीने के लिए रुपया–पैसा, सुख–सुविधाएं जरूरी हैं, मगर इन्हें ही जीवन का मकसद बना लेना मेरे ख्याल में नासमझी ही कही जाएगी। इस बात का हमेशा ध्यान रखें कि कोई भी आदमी इसलिए महान नहीं होता कि उसने दुनिया से क्या लिया, महान इसलिए होता है कि उसने दुनिया को क्या दिया। देना, लुटाना, न्यौछावर कर देना–यही इस दुनिया में अमर बनने का फार्मूला है। अत: धनदान, ज्ञानदान, श्रमदान–जो कुछ भी बन सके समाज के हित में उत्साहपूर्वक करें। ऐसा करने से लोक–परलोक दोनों ही संवर जाएंगे।

आज लोगों के बीच हमारी जो पहचान है, वह एक उद्योगपति से भी बढ़कर मेरी उस भावना की बदौलत है जो मुझे हमेशा समाज को खुशहाल बनाने की दिशा में प्रयासरत रहने को प्रेरित करती है। मैं शुरू से ही इस बात का समर्थक रहा हूँ कि जिसकी कीर्ति है वही जीवित है और इसीलिए मन से, तन से, धन से यथासंभव सबको सुख पहुंचाने की चेष्टा करता हूँ। भावी पीढ़ी से भी मैं यही आग्रह करूंगा कि इसी प्रकार आप भी अपनी उपलब्धियों से समाज को फायदा पहुंचाएँ, ताकि आपकी भी कीर्ति पताका सदैव लहराती रहे।

– महाशय धर्मपाल, अध्यक्ष
महाशय चुन्नीलाल धर्मार्थ ट्रस्ट

Cont. From Page 4

Vinayji appealed for donations for the construction of Ashram which has to be completed within one year. As the program was being broadcasted live on Sanskar and Sadhana channels, many people who were watching the event came forward and called by telephone and promised donations for this noble cause. Mahashayji further promised an additional amount of Rs.1 crore, 11 lakhs, eleven thousand, one hundred eleven – Rs.1,11,11,111/- for the construction of the Ashram building.

Shri. Manoj Gulati, owner of Arpan Builders promised R.2,51,000 and many more assurances worth Rs.10 lakhs additional fund was promised by well wishers during the event. One of Acharya Shri's disciple Shri. Jackson Joseph promised Rs.1,11,111/- and Karnataka Arya Pratinidhi Sabha also declared Rs.1,51,000/- donation for the Ashram.

The entire program was a memorable and historic event, witnessed by thousands of people. This will definitely go a long way in bringing back Vedic Culture and symbolizing the dawn of a new era in south India, especially in Kerala.

केरल जो कभी वैदिक धर्म का केन्द्र था, वहां गत 100 वर्षों में क्या-क्या घटित हुआ, उन सत्य घटनाओं पर आधारित वीर सावरकर जी का प्रमाणिक उपन्यास

'मोपला'

अवश्य पढ़ें।
प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें-
वैदिक प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष: 23360150, 9540040339

आर्यसमाज लेखू नगर त्री नगर का

श्रावणी पर्व समारोह

29 अगस्त से 31 अगस्त 2014

यज्ञ–प्रवचन : प्रात: 7 से 9 बजे
प्रवचन : आचार्य देव शर्मा वेदालंकार
भजन : श्री जबर सिंह खारी

यज्ञ पूर्णाहुति एवं आर्य सम्मेलन

31 अगस्त : प्रात: 8 बजे से

– लक्ष्मीनारायण, मन्त्री

मुख्य मंच, अतिथियों का सम्मान एवं शिलान्यास

महाशय धर्मपाल जी का सम्मान करते डॉ० सत्यपाल सिंह, आचार्य एम.आर. राजेश एवं श्रीमती मीरा राजेश

श्री प्रेम अरोड़ा जी का स्वागत

महाशय जी की सुपुत्रियां श्रीमती किरण ग्रोवर, श्रीमती प्रतिभा छनिजो एवं दामाद श्री अशोक छनीजो।

श्री राजेन्द्र जी, श्री राजीव आर्य जी।

डॉ. राधाकृष्ण वर्मा जी, डॉ. ब्रह्ममुनि जी, डॉ. सत्यपाल सिंह जी, स्वामी सदानन्द जी से आशीर्वाद लेते आचार्य राजेश

वेद अनुसंधान केन्द्र (वेदाश्रम) की नींव रखते एवं नामपट्ट का अनावरण करते महाशय जी

साप्ताहिक आर्य सन्देश
25 अगस्त 2014 से 31 अगस्त 2014
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

दिल्ली पोस्टल रजि.नं. डी.एल.(एस.डी.)-११/४०३१/२०१२-१३-१४
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक २८/२९ अगस्त, २०१४
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेंस नं० यू(सी) १३९/२०१२-१४
आर. एन. नं. ३२३८७/७७ प्रकाशन तिथि: बुधवार २७ अगस्त, २०१४

सभी आयु के श्रद्धालुओं ने दी राष्ट्र समृद्धि यज्ञ में आहुतियां

यज्ञ में भाग लेने के लिए कतारबद्ध श्रद्धालुजन

केरल की मातृशक्ति एवं परिवारों के युवाओं ने ईश्वर भक्ति के भजनों को प्रस्तुत करके जन-साधारण को भाव विभोर कर दिया

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक प्रे० राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए हरि हर प्रेस, ए-२९/२, नारायणा औद्यो. क्षेत्र-१, नई दिल्ली-२८ से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ टेलीफैक्स : २३३६०१५०; २३३६५९५९; से प्रकाशित किया।
सम्पादक : प्रे० राजसिंह आर्य   सह सम्पादक : विनय आर्य   व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान   सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ. ओमप्रकाश भटनागर एम. पी. सिंह